P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वर्तमान भारत में स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता

दीप्ति चतुर्वेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
राजकीय बांगड़ महाविद्यालय,
पाली, राजस्थान, भारत

सारांश

भारत के विस्तृत भू–भाग पर समय–समय पर अनेक महापुरुषों ने अपने जीवन कार्य द्वारा प्रेरणादाई जीवन यात्रा रच कर संपूर्ण संसार में सांस्कृतिक ऊंचाइयों से विश्व का मार्गदर्शन कर सकने का मार्ग बनाकर संसार को अचंभित कर दिया है। इस वीर प्रसूता भारत मां की वंदना के लिए असंख्य लालो ने अपने रक्त से तर्पण कर उसकी आन बान और शान के लिए नित्य नूतन आदर्श स्थापित किए हैं। इन्हीं में से एक स्वामी विवेकानंद ने भारतीय ज्ञान–विज्ञान परंपरा के एक अध्येता बनकर अपने वैचारिक मार्गदर्शन से रुके संसार को अपने प्रभावी प्रस्तुतीकरण तथा अकाट्य तर्कों के माध्यम से अभिभूत कर दिया है। संपूर्ण भारत वर्तमान में मूल्य हीनता, धार्मिक असहिष्णुता, शैक्षिक अवमूल्यन, गरीबी, अशिक्षा बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, राजनीति में अनैतिकता, जातिगत भेदभाव समाज में महिलाओं की दुर्बल स्थिति से गुजर रहा है। वर्तमान भारत की इन समस्याओं और प्रश्नों को स्वामी विवेकानंद ने आज से 100 वर्ष से पहले ही पहचान लिया था। उनके जीवन के लगभग सभी पहलू आज भी प्रासंगिक व सार्थक प्रतीत होते हैं । बहुत सी बातों में वे अपने समय से बहुत आगे थे। और एक युग दृष्टा की तरह उन्होंने आने वाली चुनौतियों की और स्पष्ट संकेत कर दिया था हमारे राष्ट्रीय जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है । जिसका हल उनकी शिक्षाओं में ना हो। प्रस्तुत लेख में हम भारत की वर्तमान में मुख्य समस्याएं, उनके समाधान के विषय में स्वामी विवेकानंद के विचारों की विवेचना करेंगे।

मुख्य शब्द : स्वामी विवेकानंद आध्यात्मिक शक्ति, सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति।

प्रस्तावना

'उठो ! जागो ! और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत।' भारत की आध्यात्मिक शक्ति, सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति का गौरव विश्व भर में स्थापित करते हुए मानवता के कल्याण और राष्ट्र के प्रति जीवन समर्पित कर देने वाले युवा सन्यासी स्वामी विवेकानंद का यह हृदय भेदी आह्वान आज की युवा पीढ़ी को प्रेरणा दे रहा है। स्वामी विवेकानंद की प्रतिभा बहुमुखी थी 40 वर्ष से भी कम आयु तथा लगभग 10 वर्ष के अपने कार्यकाल के दौरान वे संपूर्ण जगत और विशेषकर भारत को जो कुछ दे गए वह आगामी अनेक शताब्दियों तक मानवता की थाती बना रहेगा। अपने जीवन के संध्याकाल में उन्होंने स्वयं कहा था कि वे जो कुछ भी कर चुके हैं। वह पंद्रह सौ वर्षो के लिए यथेष्ट है। स्वामीजी के विचारों की चिर प्रासंगिकता के विषय में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 1950 में अपने भाषण के दौरान कहा था "यदि आप स्वामी विवेकानंद की रचनाओं तथा व्याख्यानों को पढ़ें तो आप एक बड़ी विचित्र बात यह पाएंगे कि वे कभी पुराने नहीं लगते यद्यपि यह बातें आज से कई वर्षो पूर्व कहीं गई थी पर आज भी तरोताजा लगती है। इसका कारण यह है कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा या कहा है वह हमारी अथवा विश्व की वर्तमान समस्याओं के मूलभूत पहलुओं से संबंधित है। रामधारीसिंह दिनकर की शब्दों में ''राम मोहन, केशव सेन, दयानंद, रानाडे, एनी बेसेंट, रामकृष्ण एवं अन्य चिंतकों तथा सुधारको ने भारत में जो जमीन तैयार की विवेकानंद उसमें से अश्वत्थ होकर उठे। अभिनव भारत को जो कुछ कहना था वह विवेकानंद के मुख से उदगीर्ण हुआ। अभिनव भारत को जिस दिशा की ओर जाना था उसका स्पष्ट संकेत विवेकानंद ने दिया। विवेकानंद वह सेतु है जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं विवेकानंद वह समुद्र है जिसमें धर्म और राजनीति, राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता तथा उपनिषद और विज्ञान सबके सब समाहित होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. वर्तमानभारत की प्रमुख समस्याएं क्या है?
2. वर्तमान भारत की मुख्य समस्याओं के कारण क्या है?
3. इन समस्याओं के प्रसंग में स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गई शिक्षा क्या है?
4. स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं वर्तमान भारत की समस्याओं को सुलझाने में कितनी प्रासंगिक है?

समसामयिक भारतीय सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद का चिंतन और उसकी प्रासंगिकता

स्वामी विवेकानंद से पूर्व भी भारत में अनेक संत महात्मा उत्पन्न किए किंतु उन सब ने व्यक्तिगत मोक्ष का ही संदेश दिया। स्वामी विवेकानंद पहले ऐसे सन्यासी थे जिन्होंने धर्म को जीवन से जोड़ा।समाज और राष्ट्र से जोड़ा। उन्होंने धर्म को पहाड़ और कंधों से उतारकर हमारे रोज की जीवन में डालने का वंदनीय कार्य किया।भारत में पुनर्जागरण का प्रारंभ जिस शताब्दी में हुआ उस कालखंड में युग नायक स्वामी विवेकानंद ने भारत की आत्मा को झकझोर कर नए युग का सूत्रपात किया और राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।स्वामी विवेकानंद ने राजनीतिक और सामाजिक जीवन के प्रत्येक पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत किए।स्वामी विवेकानंद ने धर्म, अध्यात्म, समाज दर्शन चिंतन सभी स्तरों पर वही मार्ग अपनाया जिसे उन्होंने अपनी तर्क बुद्धि और विवेक की कसौटी पर परखने के बाद सही समझा। देखने में यह बात विचित्र लग सकती है कि आज से 100 वर्षों से अधिक समय पहले उन्होंने भारतीय समाज की समस्या और प्रश्नों को पहचान लिया था जो आज भी हमारे लिए चुनौती बनी हुई है।सच तो यह है कि उनके जीवन के लगभग सभी पहलू आज भी प्रासंगिक व सार्थक है।बहुत सी बातों में वे अपने समय से बहुत आगे थे और एक युग दृष्टा की तरह उन्होंने आने वाली चुनौतियों की ओर स्पष्ट संकेत कर दिया था। हमारे राष्ट्रीय जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसका हल उनकी शिक्षाओं में ना हो।स्वामी जी ने अपने जीवन तथा संदेशों के माध्यम से विश्व में एक युवा आदर्श उपस्थित किया जिसे पूर्ण रूप से विकसित होने में संभवत शताब्दीयां लग जाएगी। जीवन के हर पहलू पर उनका मूल्यांकन अचंभित कर देने वाला है।और आज के दौर में भी प्रासंगिक हैं। उनके शब्दों में व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय स्तर पर समस्याओं का समाधान करने की शक्ति है।

स्वामी विवेकानंद ने एक परिवारजक के रूप में सारे भारत की यात्रा की देश की जनता की दुरावस्थाको देखा तो उनका हृदय करुणा से फट पड़ा उन्हें लगा कि जब तक गरीबों की अवस्था में सुधार नहीं होता तब तक भारत के नव–निर्माण की आशा नहीं की जा सकती। वे मानते थे कि आम जनता को उठाना होगा, भारत को उठाना होगा, गरीबों को भोजन देना होगा, शिक्षा का विस्तार करना होगा और पुरोहित प्रपंच की बुराइयों का निराकरण करना होगा तभी भारत का नव निर्माण संभव है।स्वाधीनता प्राप्ति के 71 वर्षों के बाद आज जब हम अपनी उपलब्धियों का सिंहावलोकन करते हैं तो लगता है कि जहां हमने कई क्षेत्रों में यथेष्टप्रगति कर ली है, वहीं हम मूल्यहीनता, धार्मिक असहिष्णुता, सांप्रदायिक संघर्ष शैक्षिक अवमूल्यन जैसे भयंकर रोगों के शिकार भी हो गए हैं। अतः हमें मार्गदर्शन की आवश्यकता है। हमें इसके लिए ऐतिहासिक दृष्टि एवं परिप्रेक्ष्य से संपन्न एक महान दूरदर्शी शिल्पी की आवश्यकता है। और वह शिल्पी हैं "स्वामी विवेकानंद"

हर समस्या के प्रति स्वामी जी का दृष्टिकोण वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक सोच का अद्भुत संगम था। स्वामी विवेकानंद भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति को लेकर बहुत चिंतित थे। वे कहते थे कि निश्चित रूप से महिलाओं की समस्याएं बहुत–सी और गंभीर है।परंतु उनमें से एक भी ऐसी नहीं हैजो जादू भरे "शिक्षा" शब्द से हल ना की जा सकती हो उनका मानना था कि हमें नारियों को शिक्षित करके ऐसी स्थिति में पहुंचा देना है कि वे समस्याओं को स्वयं अपने ढंग से सुलझा सके।स्वामी जी का कहना था कि 500 पुरुषों के द्वारा भारत को उज्जवल बनाने में 50 वर्ष लग सकते हैं परंतु 500 महिलाओं के द्वारा यह कार्य कुछ ही दिनों में संपन्न हो सकता है।स्वामी जी ने स्त्रियों के सशक्तिकरण के संबंध में मौलिक समाधान दिए। उन्होंने पुरुषों और नारी के भेद को स्वीकार्य नहीं माना उन्होंने कहा कि दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं, आज नारी सशक्तिकरण की बात की जा रही है।स्त्रियों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए सख्त कानून की चर्चा चल रही है। क्या इन कानूनों से समाज में उठ रहे प्रश्नों का समाधान हो सकेगा ।वास्तव में यह सब संस्कारों, शिक्षा और नैतिकता के द्वारा ही संभव है। स्वामी जी ने नारी उत्थान के लिए एक सूत्र दिया कि उनको शिक्षा दें वे समाज की दशा औरदिशा को सुधारने में सक्षम है।

स्वामी जी महिला अधिकारों तथा लिंग समानता के भी बेहद समर्थक थे वे नारी उत्थान के द्वारा देश का नवजागरण करना चाहते थे आज जब वर्तमान भारत में स्त्रियों की गरिमा का हनन हो रहा है ऐसी स्थिति में स्वामीजी के भारतीय नारी के संदर्भ में विचार उल्लेखनीय ही नहीं वरन प्रेरणा देने वाले भी हैं।स्वामी जी ने नारी को भारतीय परंपरा की मूल प्रकृति माना भारतीय नारी के उत्थान के लिए स्वामी जी सामाजिक सजगता और दायित्व बोध को विशेष महत्वपूर्ण मानते थे।समाज को भेदभाव और रूढ़ियों से मुक्त होकर नारी को स्वतंत्र सत्ता और महत्ता देनी होगी तभी समतामूलक समुन्नत समाज की स्थापना संभव है।उनका कहना था कि नारी ही परिवार और समाज की केंद्र बिंदु है।उन्हें अपनी प्राचीन परंपरा और मूल को मानकर नारी की महिमा को पहचानने की आवश्यकता है।शिक्षा, शील, संस्कार से युक्त नारी जब सशक्त होगी तब भारत हर क्षेत्र में उन्नत होगा। अब शक्ति और भक्ति का युग आने वाला है जो विश्व को अखंड ऊर्जा प्रदान करेगा। यह नारी ही शक्ति भक्ति और प्रगति की वाहक बनेगी। स्वामीजी का मानना था कि हम प्राचीन भारत की नारियों को आदर्श मानकर ही नारी का उत्थान और सशक्तीकरण कर सकते हैं।शिक्षा के द्वारा समोउन्नति के पथ पर अग्रसर करना ही स्वामी जी के नारी–विषयक चिंतन का सार है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी यही बात लागू होती है । आज की शिक्षा व्यवस्था मूलतः अधिक से अधिक

जानकारियां एकत्रित करने का साधन मात्र है।इससे व्यक्ति जानकार तो हो सकता है, परंतु शिक्षित नहींहै। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा तो व्यक्ति में अंतर्निहित क्षमताओं को प्रस्तुत करने का माध्यम है ।मूल उद्देश्य जानकारी देना नहीं वरन व्यक्ति प्रतिभा को निखारना है। स्वामी विवेकानंद ऐसी शिक्षा के पक्षधर थे जो सकारात्मक हो, जिससे चरित्र निर्माण हो मानसिक शक्ति बढ़े बुद्धि विकसित हो तथा देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे। शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जिसमें भौतिक मूल्यों पर नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की श्रेष्ठता स्थापित हो। स्वामीजी का मत था कि मनुष्य के अंदर ज्ञान का असीम भंडार है। बाहरी जगत तो मनुष्य की चेतना को जागृत करने का वातावरण मात्र प्रदान करता है वे कहते थे कि विश्व का असीम ज्ञान मानव के अंतः करण में विद्यमान है।

स्वामी विवेकानंद के मतानुसार प्रत्येक शिक्षार्थी को ब्रह्मचर्य व्रत का पालनअनिवार्य रूप से करना चाहिए। ब्रह्मचारी ही ब्रह्म ज्ञान और आत्म ज्ञान का स्रोत है। इसी से सच्ची श्रद्धा और विश्वास का उदय होता है साथ ही शिक्षा संस्थानों को ऐसे समर्पित त्यागी प्रज्ञावान शिक्षक तैयार करने चाहिए। जो समाज को धार्मिक के साथ–साथ लौकिक शिक्षा भी कुशलता पूर्वक दे सकें। स्वामी जी सकारात्मक शिक्षा के समर्थक थे। बालक को प्रशंसा से प्रोत्साहन मिलता है इसके विपरीत तुम मूर्ख हो, गधे हो कहने पर अधिकतर छात्र वैसे ही बन जाते हैं।अच्छा शिक्षक विद्यार्थी का उत्साहवर्धन कर के आगे बढ़ने की गति प्रदान कर सकता है।शिक्षा के प्रति स्वामी जी की दृष्टि व्यापक और समन्वयवादी थी। वे मानते थे कि वेदांत से प्रेरित आध्यात्मिक विद्या के साथ भौतिक प्रगति के लिए पाश्चात्य अंग्रेजी शिक्षा भी वांछित है। तकनीकी ज्ञान के विकास के आधार पर विद्यार्थी नौकरी के लिए इधर–उधर भटकने के बजाय अपने नए नए उद्योग धंधे चला सकता है और आत्मनिर्भर रहकर आजीविका के लिए प्रचुर धन अर्जित कर सकता है। स्वामी जी सच्ची सुलभ शिक्षाशिक्षा के पक्षधर थे सच्ची शिक्षा से समाज का दुर्बल वर्ग भी राष्ट्र के पुनर्निर्माण में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। साथ ही स्वामी जी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को ही रखना चाहते थे।शिक्षा को स्वामी विवेकानंद के विचारों के आलोक में पुनः अनुप्राणित कर व्यवहार में क्रियान्वित करना होगा। ऐसे करने पर ही हमारी शिक्षा राष्ट्रीय पुनरुत्थान की वाहक बन सकेगी।

किसी भी देश के युवा उसका भविष्य होते हैं । उन्हीं के हाथों में देश की उन्नति की बागडोर होती है आज के परिदृश्य में जब भारत में चारों और समस्याओं का बोलबाला है ऐसे में देश की युवा शक्ति को जागृत करना और देश के प्रति कर्तव्यों का बोध कराना अत्यंत आवश्यक है। विवेकानंद एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो हर युवा का आदर्श बन सकतेहै। उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा था कि निराशा कमजोरी है तथा ऐसा युवाओं की सबसे बड़े शत्रु है । विवेकानंद ने युवाओं को जीवन में लक्ष्य निर्धारण करने के लिए स्पष्ट संकेत दिए और कहा कि तुम सदैव सत्य का पालन करो विजय तुम्हारी होगी।

स्वामी विवेकानंद जाति आधारित भेदभावों के सर्वथा विरुद्ध थे उनका कहना था कि जाति प्रथा वेदांत के धर्म के विरुद्ध है । स्वामी जी सभी के लिए समान अवसर के पक्षधर थे। आज भारत में जब जातिगत वैमनस्य ऊंच–नीच अगड़ों–पिछड़ों की समस्या चल रही है। जातिवाद की राजनीति राजनीतिक दलों का एक पुश्तैनी धंधा बन चुकी है। स्वामी जी ने आज से एक शताब्दी पहले ही इस समस्या से बढ़ने वाली जटिलताओं को पहचान लिया था। स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय विकास में राष्ट्रीय एकीकरण की भूमिका को पहचान चुके थे वे राष्ट्रीय एकीकरण के उत्साही पैरोकार थे।

यदि कृषि क्षेत्र की बात करें तो विवेकानंद जी का मानना था कि कृषि का प्रशिक्षण अनिवार्य है। किसानों के प्रशिक्षण के पुख्ता प्रबंध अनिवार्य है सरकार इस संबंध में कई सुनहरी योजनाएं बनाती है। पर वह कागजों से आगे नहीं जा पाती। आज जब भारतीय किसान आत्महत्या को विवश है तो स्वामी जी के विचार अत्यंत प्रासंगिक लगते हैं।

स्वामी विवेकानंद नैतिकता को जीवन जीने की पद्धति के रूप में माना जो अच्छे नागरिकों के निर्माण में सहायक होती है उनका मानना था कि देश में सामाजिक विकास राजनीतिक नैतिकता पर निर्भर करता है भारतीय राजनीति में राजनेताओं द्वारा नैतिकता के अनेक उत्कृष्ट उदाहरण देखे हैं। लेकिन वर्तमान समय में राजनीति का अर्थ साम,दाम, दंड, भेद तक सीमित हो गया है विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत वर्तमान राजनीति में नैतिकता से दूर होता जा रहा है और भारतीय राजनीति आदर्शों से विहीन होती जा रही है। स्वामी विवेकानंद राजनीति में नैतिकता के पतन से बहुत ज्यादा चिंतित थे उनका मानना था कि राजनीतिज्ञों का मूल उद्देश्य सेवाभाव होना चाहिए। स्वामी जी के विचारों के ठीक विपरीत राजनीति में सेवा और त्याग का स्थान मौका परस्ती और जनकल्याण का स्थान स्वयं कल्याण ने ले लिया है। आजादी के लगभग 71 वर्षों बाद भी स्वामी विवेकानंद के सपनों वाली भारतीय राजनीति दिवास्वप्न बनकर रह गई है और भारतीय राजनीति में नैतिकता अभी तक अपनी जड़े तलाश रही है। स्वामी जी का राजनीतिक दर्शन भारत के लिए पाती है और मानव जीवन के विकास का मूल मंत्र है।भारत की राजनीति स्वामी जी के दर्शन के आलोक में बनेगी तो निश्चित ही प्रबुद्ध भारत समुन्नत रूप में विश्व पटल पर उतरेगा।

स्वामी विवेकानंद के अवदान के इन्हीं पक्षों को ध्यान में रखकर उन्हें युग नायक, युग प्रवर्तक, योगाचार्य, विश्व मानव, राष्ट्र दृष्टा, विचार नायक, योद्धा, सन्यासी आदि उपमाऐं प्रदान की गई है। भारत के स्वर्णिम भविष्य के लिए आवश्यक है कि हमारी वर्तमान पीढ़ी स्वामी जी के विश्व साहित्य का विभिन्न दृष्टिकोंणो से गंभीरता पूर्वक अध्ययन करें।

वर्तमान भारत विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है। स्वतंत्रता के 71 वर्षों पश्चात भी हम विकास के उन सोपानों को प्राप्त नहीं कर पाए हैं, जिन पर चढ़कर भारत विकासशील राष्ट्रों की पंक्ति से निकलकर विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा हो सकता है। वर्तमान भारत को

समस्याओं से उबारने में यदि कहीं आशा की किरण नजर आती है, तो वह है स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गई अमूल्य शिक्षाएं और संदेश। यद्यपि सन् 1902 में स्वामी विवेकानंद का भौतिक अस्तित्व हमसे विदा ले गया परंतु मौजूदा दौर में समस्याओं से ग्रस्त भारत के मार्गदर्शन के लिए उनके विचार हमारे सामने हैं। एक लेखक के शब्दों में

प्रासंगिक जग में हुए, आज विवेकानंद
लिपट रहा संसार फिर, मोह माया केफंद
लोहा जिनके ज्ञान का, मान चुका संसार
उसी देश में फैल रहा, अविज्ञान विकार,
यक्ष प्रश्न फिर से उठे, कैसे संभले देश
भारत सब संशय मिटे, ले विवेक संदेश

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद ने भारतवर्ष का एक छोर से दूसरे छोर तक भ्रमण किया था। भारतवासियों के संबंध में उन्हें वास्तविक जानकारी प्राप्त थी। इसीलिए भारत की समस्याओं का अधिकार पूर्ण विवेचना करने के वे अधिकारी थे। भारत को यदि जीवित रहना है और प्रगति करते हुए अपने खोए हुए वैभव को प्राप्त करना है तो अपनी राष्ट्रीय समस्याओं का हल उसे" स्वामी विवेकानंद"में ढूंढना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

चौरसिया उमेश "युवा आदर्श– स्वामी विवेकानंद "शैक्षिक मंथन(मई 2018,
चतुर्वेदीविष्णुप्रसाद"अद्वैत की वैज्ञानिकता और स्वामी विवेकानंद"रुक्टा नई दिल्ली (2014,
ढ़ाडापूनम "क्लासएंड कास्ट स्ट्रगल इन इंडिया" अनमोल पब्लिकेशन(2011,
निखिलआनंद" स्वामीविवेकानंद– एक जीवनी" अद्वैत आश्रम(1989,
पांडेय संतोष" जड़ता के विरोधी स्वामी विवेकानंद" शैक्षिक मंथन (जनवरी 2014,
राय कोटेश्वरा "एंपावरमेंट ऑफ वूमेन इन इंडिया"(2005,
व्यास सीताराम "स्वामी विवेकानंद और नारी सशक्तिकरण" शैक्षिकमंथन (दिसंबर 2016,
विवेकानंदस्वामी "वर्तमानभारत" रामकृष्णमठप्रकाशन(1999,
विदेहआत्मानंदस्वामी" स्वामी विवेकानंद और उनका अवदान" अद्वैत आश्रम (2002,
विवेकानंद स्वामी ''शिक्षा'' रामकृष्ण मठ प्रकाशन (2013,
विवेकानंद स्वामी ''पॉवर ऑफ द माइंड'' अद्वैत आश्रम (1976,
विवेकानंद स्वामी ''स्वामी विवेकानंद ऑन इंडिया एंड हर प्रॉब्लम'' अद्वैत आश्रम (2005,
विवेकानंद स्वामी ''टीचिंग ऑफ स्वामी विवेकानंद'' वेदांता पब्लिकेशन (1971,
शेखरहिमांशु "विवेकानंद के सपनों का भारत "डायमंड पॉकेट बुक्स(2014,